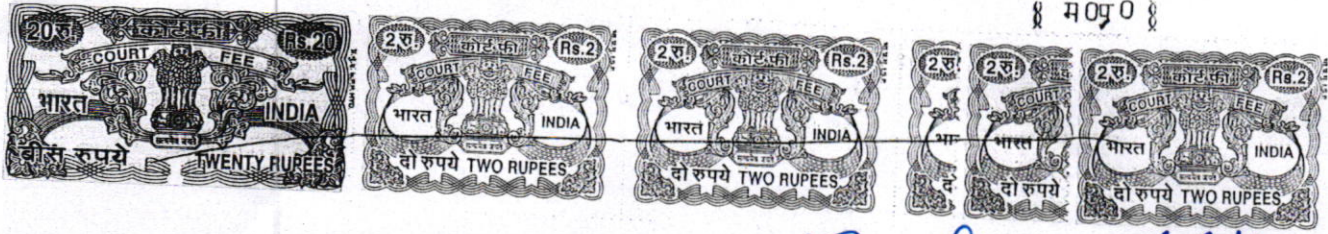


ऋयायालय श्री मान राजव महल ग्वालियर सर्किट कोर्ट रीवा, जिला - रीवा



१ म०प्र० १

- 1- विजय शंकर द्विवेदी, १ II/सिंग०/सिका/2017/4964
 2- जय शंकर द्विवेदी, १ तीनों के पिता स्व० जगदीश प्रसाद द्विवेदी,
 3- प्रफुल्ल चन्द्र द्विवेदी, १ नि० ग्राम तेदुआ, बैलान, तहसील हनुमना,
 जिला - रीवा म०प्र० --- निगरानीकतारिण

बनाम

- 1- कृपा शंकर तनय इन्द्रमणि प्रसाद द्विवेदी, १ 1 ता 4 निवासी ग्राम तेदुआ
 2- रामाश्रय तनय मेवालाल द्विवेदी, १ बैलान, तह० हनुमना, जिला-
 3- सु० क्तसिया देवा राम प्रसाद ब्रा० १ रीवाम०प्र०
 4- इन्द्रमणि प्रसाद वर्मा पिता रामगरीब वर्मा,
 5- अरुणा द्विवेदी पत्नी ज्ञानेन्द्र द्विवेदी, पुत्री स्व० जगदीश प्रसाद द्विवेदी,
 नि० ग्राम दुवगवा, दुबान, तह० मउगंज, जिला - रीवा म०प्र०
 6- श्रीमती मजू मिश्रा पत्नी श्री अंजनी प्रसाद मिश्रा पुत्री स्व० जगदीश प्रसाद
 द्विवेदी, नि० ग्राम पन्नी, तह० मउगंज, जिला - रीवा म०प्र०

----- गैर निगराकारण

अनुविभागीय अधिकारी तह० हनुमना, जिला
 रीवा द्वारा प्र०प्र० 15ए/27 16-17 मेपारित
 आदेश दिनांक 10-11-17 के विरुद्ध निगरानी
 निगरानी अन्तर्गत धारा 50 म०प्र०:०२०१०

मान्यवर,

निगरानी के आधार निम्न है :-

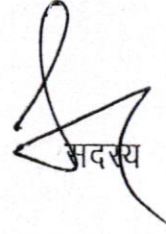
- 1- यहाँकि अधीनस्थ अनुविभागीय अधिकारी तहसील हनुमना का आदेश दि०
 10-11-17 उक्त आदेश न होने से स्थिर रखे जाने योग्य नहीं है।

राजस्व मण्डल, मध्यप्रदेश-ग्वालियर
अनुवृत्ति आदेश पृष्ठ
भाग-अ

प्रकरण कमांक दो-निगरानी/रीवा/भू.रा./2017/4964

स्थान दिनांक	कार्यवाही तथा आदेश	पक्षकारों एवं अभिभाषकों आदि के हस्ताक्षर
19/6/18	<p>निगरानी की ग्राह्यता पर आवेदकगण के अभिभाषक को पूर्व पेशी पर सुना जा चुका है। यह निगरानी अनुविभागीय अधिकारी हनुमना के प्रकरण कमांक 15 अ 27/16-17 में पारित आदेश दिनांक 10-11-17 के विरुद्ध म0प्र0 भू राजस्व संहिता, 1959 की धारा 50 के अंतर्गत प्रस्तुत हुई है।</p> <p>2/ आवेदकगण के अभिभाषक का तर्क है कि स्वर्गीय जगदीश प्रसाद द्विवेदी ने नायव तहसीलदार वृत्त पहाड़ी के प्रकरण कमांक 6 अ 27/09-10 में पारित आदेश दिनांक 15-6-16 के विरुद्ध अनुविभागीय अधिकारी हनुमना के समक्ष अपील प्रस्तुत की।। अपील प्रचलित रहने के दौरान 10-2-17 को अपीलांत जगदीश प्रसाद का स्वर्गवास हो गया। मृतक के वारिसान को रिकार्ड पर लेने के लिये सिविल प्रक्रिया संहिता आदेश 22 नियम 3 का आवेदन 14-9-17 को प्रस्तुत किया गया, जिसे अवधिवाह्य पाते हुये अनुविभागीय अधिकारी ने आदेश दिनांक 10.11.17 से अपील उपसमित होना मानकर प्रकरण समाप्त कर दिया। इसी आदेश के विरुद्ध यह निगरानी है।</p> <p>3/ आवेदकगण के अभिभाषक के प्रारंभिक तर्कों पर विचार करने एवं प्रस्तुत अभिलेख के अवलोकन से परिलक्षित है कि अनुविभागीय अधिकारी के समक्ष अपील प्रचलन के दौरान अपीलकर्ता जगदीश प्रसाद की दिनांक 10-2-17 को मृत्यु हुई है जिसके वारिसान को रिकार्ड पर लेने का आवेदन 14-9-17 को प्रस्तुत हुआ है। जैसाकि आवेदकगण के अभिभाषक ने बताया है कि अपीलांत अंचलीय क्षेत्र के वासिन्दा है और स्वर्गीवासी जगदीश के वारिसान को ग्रामीण होने एवं अधिक पढ़े लिखे न होने से इस कानून की जानकारी</p>	

नहीं थी कि 90 दिवस के भीतर ही मृतक के वारिसान को रिकार्ड लाया जाना अनिवार्य है । जहां तक अभिभाषक द्वारा उन्हें इस आशय की सूचना समय पर न देने का प्रश्न है? अभिभाषक की त्रुटि के लिये पक्षकार को दंडित नहीं करना चाहिये , जिसके कारण सात माह के विलम्ब में से तीन माह घटाने पर केवल 4 माह का विलम्ब अनुचित विलम्ब की श्रेणी में उक्त कारणों से मानकर अपीलांट को न्याय से बंचित करना उचित प्रतीत नहीं होता है। फलस्वरूप निगरानी आंशिकरूप से स्वीकार की जाकर अनुविभागीय अधिकारी हनुमना द्वारा प्रकरण क्रमांक 15 अ 27/16-17 में पारित आदेश दिनांक 10-11-17 मानवीय दृष्टिकोण , उदारता तथा न्यायदान के आदेश की श्रेणी में न होने के कारण निरस्त किया जाकर निर्देश दिये जाते हैं कि उभय पक्ष को सुनवाई का समुचित अवसर प्रदान करते हुये अपील प्रकरण का निराकरण गुणदोष के आधार पर करें।


सदस्य